ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 29-31**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

भक्ति आन्दोलन के संतों द्वारा किये गये प्रगतिवादी विमर्श का समाज पर प्रभाव

डॉ0 रजनीश कुमार राय

पूर्व शोध अध्येता – इतिहास, गया प्रसाद स्मारक राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़ (उ0प्र0) भारत

Received-05.07.2025, Revised-12.07.2025, Accepted-18.07.2025 **E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

सारांशः भक्ति मार्ग का विकास भारतीय मध्युगीन इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। भक्ति आन्दोलन से विश्व में भारत की अपनी पहचान बनी। यह एक समग्र आन्दोलन था जिसका सम्बन्ध मानव जीवन की पूर्णता से था। इसकी भूमिका इतिहास, दर्शन, साहित्य और समाज का समायोजन है। भारत एक विशाल सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भाषायी भिन्नता वाला देश है। विभिन्नता से एकता भारतीय संस्कृति रखना विशेषता है और साथ ही इस एकता को बनाये रखना उसके समय एक चुनौती भी है। समय–समय पर इन विभिन्नताओं के चलते राष्ट्रीय एकता के सम्मुख अनेक संकट उत्पन्न होते रहे हैं, जो अलगाववादी प्रवृत्तियों को जन्म देते हैं।

कुंजीभूत शब्द– **सन्त कबीर, कर्णधार, बहुदेववाद, एकेश्वरवाद, कल्याणकारी, कुरीतियां, मुखरित, भर्त्सना, कर्मकाण्ड, बर्हिपूजा।**

सोलहवीं शताब्दी के सूफी आन्दोलन और भक्ति आन्दोलन ने सर्वसाधारण की दशा बदल दी। भक्ति आन्दोलन का जन्म जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। भक्ति आन्दोलन के कर्णधार थे, सन्त कबीर।[1] वास्तव में, सन्त कबीर उत्तर भारत की सामान्य जनता के सच्चे प्रतिनिधि थे। उन्होंने पाठशाला में जाकर कोई शिक्षा गृहण नहीं की थी, फिर भी कबीर युग दृष्टा बन गये। उनकी प्रसिद्धि का पहला कारण था कि वे जनसाधारण में जन्मे थे और उन्होंने इस वर्ग की पीड़ा को स्वयं सहन किया था। इसके अतिरिक्त सन्त कबीर भक्ति और ज्ञान के सन्देशवाहक बने। हिन्दू धर्म के अन्तर्गत निराकार का सन्देश देकर उन्होंने सिद्ध कर दिया कि जिस वर्ग द्वारा बहुदेववाद का खण्डन किया जा रहा था, उसके प्रचारकों को यह नहीं मालूम था कि एकेश्वरवाद का मूल स्रोत हिन्दू धर्म ही था। बहुदेववाद का विकास बाद में हुआ। भारतीय चिन्तन दर्शन में ब्रह्म एक है यह अवधारणा अति प्राचीन युग में प्रस्तुत की गयी थी। एक परमात्मा को श्रेष्ठ विद्वानों ने अनेक नामों से पुकारा, किन्तु अध्यात्मिक सत्ता एक मानी गयी और उसकी शक्ति असीम और विराट समझी गयी थी। परम ब्रह्म को सर्वशक्तिशाली और सर्वदृष्टा माना गया।

सन्त कबीर ने भारतीय धर्म और संस्कृति को विनाश से बचा लिया। इस्लाम का समावेश भारतीय संस्कृति में हुआ और देश में जियो और जीने दो की संस्कृति पल्लवित हुई। हिन्दू–मुसलमान अगर जीवित रहना चाहते हैं, तो उन्हें सहअस्तित्व को स्वीकार करना होगा। इस्लाम के शासक आतताई हो सकते हैं, राजनैतिक स्वतंत्रता का वे हनन कर सकते हैं, परन्तु भारत की सांस्कृतिक चेतना को वे कुचल नहीं सकते, उसे मिटा नहीं सकते, बल्कि उसमें वह घुल मिल सकते हैं और उसको अधिक जीवन्त बना सकते हैं।

सन्तों और भक्तों ने महिला समाज पर शुभ और कल्याणकारी प्रभाव डाला। यह सत्य है कि इस शताब्दी में महिलायें दमित, शोषित, पीड़ित रही और वे बन्दिशों से कभी मुक्त नहीं हुयी। बेड़ियों में बंधकर भी उन्होंने भक्ति आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया उन्होंने चरित्र और निष्ठा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

अपनी रचनाओं के द्वारा उन्होंने साहित्यिक क्षमता का परिचय दिया।[2] उत्कृष्ट प्रभु भक्ति द्वारा उन्होंने अध्यात्म की बुलन्दियों को छुआ। निश्चित ही वे अत्यन्त जागृत आत्माएं थीं। जिन्हें आलोकिक ज्ञान का प्रसार–प्रचार करने के लिए स्वयं सर्वशक्तिमान ने भेजा था। वे धर्मपरायण थीं। उनकी राहें कठिनाई से भरी थीं, पर उन्होंने सत्य का पथ नहीं छोड़ा। उन्होंने सत्य के साक्षात्कार के लिए प्रयास किया और मोक्ष की साधना के पथ पर चली। प्रभु प्रेम का अमृत प्याला उन्होंने छक कर पिया। वे उत्कृष्ट कोटि की भक्ति साधिकाएं थी, जिन्होंने जन–जीवन को अद्भुत चेतना से भर दिया।

उस समय सती प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह निषेध, कन्या शिशु की हत्या जैसी अनेक सामाजिक बुराइयां समाज में व्याप्त थीं।[3]

यह सत्य है कि विषम सामाजिक वातावरण से निकलकर भारत के सामान्य वर्ग की नारी ने भक्ति के मार्ग पर चलने का अपूर्व साहस किया और सफलतापूर्वक आध्यात्मिक साधना की भक्ति आन्दोलन में कुछ उच्च और सम्भ्रान्त वर्ग की नारियां भी सम्मिलित हुयी। उन्हें भी अनगिनत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मीराबाई को तपती रेत पर कष्टप्रद यात्रायें सहनी पड़ी थी। मध्ययुग के नगरीय जीवन में उपेक्षित पीड़ित और जीवन से सुखी महिलाओं का एक अच्छा भाग भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्तों की शरण में आया था। वे धर्म और अध्यात्म की ओर उन्मुख होकर अपना दुख भूल जाती थी। बहुत सी महिलाएं जीविका के लिए अनैतिक मार्ग पर चली जाती थी। समाज के निकृष्ट व्यक्तियों की हवस का वे शिकार बनती थी। नाचने गाने का धन्धा अपनाकर वह कोठों का शरण लेने के लिए बाध्य थी। इस सन्दर्भ में निश्चय ही महिला भक्तों का प्रभाव श्रेयस्कर रहा था। महिलायें अनैतिक और वर्जित कार्यों से स्वयं दूर हो जाती थी, और जीवन का दुख वे सत्संग में ढूंढ़ती थी। भक्त सुधारकों का सबसे सार्थक प्रभाव नारी समाज पर यह पड़ा कि सर्वसाधारण वर्ग की महिलाएं अनैतिक मार्ग पर जाने से बच सकी। उनके ह्रदय में यह अभिलाषा जागृत हुई कि वे भी अपनी आत्मा का विकास करें जैसा कि भक्तों सन्तों से प्रभावित होकर भक्त सन्त महिलायें और भक्त साधिकाएं कर रही थीं। गलत मार्ग पर चलने के स्थान पर असंख्य मजदूर महिलाओं ने भक्ति आन्दोलन में प्रवेश करने के बाद चैन और राहत की सांस ली।[4]

मध्ययुगीन समाज में कोई स्त्री किसी पुरुष को गुरु बनायें यह अच्छा नहीं समझा जाता था। इतनी बड़ी स्वतंत्रता स्त्री को नहीं दी गयी कि वह अपने विवेक से कार्य करे। वह तो आज्ञा पालन करने वाली दासी थी, उसका दायरा केवल घर गृहस्थी तक ही सीमित था।[5] यह बहुत साहस का कार्य था। कुछ महिलाओं ने रूढ़िगत परम्परा का विरोध किया। कभी–कभी पति और पत्नी दोनों ही एक गुरू को धारण करते थे, और उनके शिष्य बन जाते थे, पर ऐसा कभी–कभी होता था कि केवल महिला ही गुरू धारण करती थी। आध्यात्मिक प्यास महिलाओं में अधिक होती थी। ऐसा इसलिए भी था कि उनकी जो अपनी दुख पीड़ा थी, उसको कहीं बाहर अभिव्यक्ति नहीं मिलती थी। वह अन्दर घुट–घुट कर जीवन व्यतीत करती थी। यह बहुत सराहना का विषय बना होगा जब महिलाओं ने समाज में फैली कुरीतियों का विरोध करना प्रारम्भ किया होगा। सन्त कवियों की आन्तरिक साधना उन्हें महान बनाने में सहायक रही।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

तत्कालीन समाज पर उनकी गहरी छाप पड़ी। यह सत्य है कि ऐसी महिलाओं की संख्या अधिक नहीं थी। भारत के भिन्न–भिन्न भागों से केवल कुछ ही महिलाएं समाज में फैली कुरीतियों के विरोध करने का साहस कर सकीं, किन्तु उनके साथ चलने वाली महिलाओं का एक बड़ा समूह था, जो उनकी अनुयायी बन जाती थीं। गृहस्थी के दायित्व को पूरा करने के बाद भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न महिला समूह महिला सन्त और साधिकाओं के निकट रहकर आध्यात्मिक रस को भी प्राप्त करने का प्रयास करती थीं।

कठिनाइयों से भरी साधारण महिला भी ऐसे समूहों से जुड़कर सुख और शान्ति प्राप्त करती थीं।[6] उनके ह्रदय में मानव मात्र के लिए गहरी संवेदना होती थी और वे कभी किसी का बुरा नहीं चाहती थी।

स्पष्ट है कि सोलहवीं शताब्दी की सामाजिक विडम्बनाओं को झेलती भारतीय नारी ने भक्त कवियों से प्रेरित होकर अपने आराध्य के प्रति सर्वात्मिना सर्वांगीण समर्पण किया और दिव्यशक्ति से ओत प्रोत हो गयी। उनकी श्रेष्ठता एवं दिव्यता का एहसास उनके सम्पर्क में आने वाले लोगों को होता था। उनका दर्शन भी सर्वसाधारण के लिए कल्याणकारी हो जाता था। कुछ आश्चर्यजनक घटनाएं भी कभी घट जाती थी, जिसकी चर्चा दरू –दरू तक होती थी। उनका यश प्रत्येक दिशा में फैल जाता था, उनके ह्रदय में मानव मात्र के लिए गहरी संवेदना होती थी और वे कभी किसी का बुरा नहीं सोचती थीं। ऐसी महिलाओं के प्रभाव से समाज के अनेक महिलाएं प्रभावित हुई और ये अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनी।

मध्ययुग में हिन्दू शिक्षा पद्धति बहुत पिछड़ी हुई थी।[7] पुरुष समाज भी अधिकतर अनपढ़ और अज्ञान था। महिलाएँ तो बहुत कम ही थीं, जिन्हें पढ़ने लिखने का अवसर मिलता था।

भक्त कवि कोई बाहरी दिखावा अथवा प्रदर्शन नहीं करते थे। उनका जीवन सरल और सादा होता था। प्रेम ही उनका लक्ष्य था और प्रेम ही उनका साधन था। समाज को उन्होंने यह सन्देश दिया कि ईश्वर के प्रति प्रेम ह्रदय में उत्पन्न करें। ईश्वर प्रेम का व्यापक दर्शन करने वाले भक्तों ने समाज को परस्पर सहयोग और समन्वय का पाठ पढाये। सन्त कवियों ने सरल जीवन कल्याण की भावना पर बल दिया। उनका जीवन दर्शन यही था कि सबका कल्याण हो। भक्ति कवि धन और सांसारिक वस्तुओं से दूर थे। वे साधारण घरों में निवास करते थे। उच्च कोटि की नैतिक शिक्षा को उन्होंने अपने जीवन भर आचरण में खरा उतारा और सर्वसाधारण वर्ग की महिलाओं से ऐसा ही करने का आह्वान किया। महिलाएँ प्रभु के प्रेम से तृप्त और संतुष्ट थी। परम्परागत राम, कृष्ण, विष्णु इत्यादि अवतारों की पूजा वे करती थी, अथवा निराकार ब्रह्म की जिसके लिए उन्हें मूर्ति पूजा की आवश्यकता नहीं थी। सन्त मीराबाई अवश्य कृष्ण की मूर्ति की भक्ति करती थी और मन्दिरों में भाव विभोर होकर नृत्य भी करती थी।[8]

यह ध्यान रखना चाहिए कि भक्त सन्त मीराबाई मूर्ति के परे निराकार ब्रह्म का दर्शन करती थीं। उन्होंने स्वयं लिखा है, "सूली ऊपर सेज पिया की, किस विधि मिलना होय।" उनका यह भक्ति गीत आज भी भारत में लोकप्रिय है। उन्होंने यह भी लिखा था "हेरी मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दर्द न जाने कोय।"[9]

भारत के कोने–कोने में उदार सन्तों और भक्तों की उत्पत्ति हुई। मध्ययुगीन भारत का इतिहास इन्हीं भक्तों, सन्तों, के कारण वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है। यदि ससांर को श्रेष्ठ भविष्य की ओर ले जाना है, तब निश्चय ही हिंसा, मार–धाड़, शोषण और अत्याचार को समाप्त करना होगा। अपने सामाजिक और धार्मिक रस्मों रिवाजों का पालन करते हुए सभी सम्प्रदाय मिल–जुलकर रहे। यह अवधारणा सबसे पहले मध्ययुगीन भारत में विकसित हुई, प्रसारित हुई और सर्वसाधरण द्वारा अपनायी गयी। जिससे भारतीयता और अपनत्व का विकास हुआ।

यह आवश्यक था कि समाज पर भक्त महिलाओं का प्रभाव उतना विशाल और व्यापक नहीं था, जितना पुरुष भक्त और सन्त महात्माओं का। इसका कारण यह था कि भारतीय समाज सदैव पुरुष प्रधान था। आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी समाज पुरुष प्रधान है। आज पढ़ी–लिखी महिला भी प्रताड़ना का शिकार है, यह कल्पना की जा सकती है कि मध्ययुगीन भारत का वह समाज कैसा होगा जब महिलाओं के लिए धर्मशास्त्रों के कठोर नियमों पर चलना अनिवार्य माना जाता था। विदेशी आक्रमणों और विदेशी शासन के कारण भी महिलाओं को अनेक वर्जनाओं से बांध दिया गया था। समाज में महिला स्वतंत्रता की अवधारणा ही नहीं थी। मुस्लिम प्रभाव के कारण पर्दा प्रथा भी समाज में अपनी जड़ जमा चुकी थी, आश्चर्य की बात है कि इस समय कर्मकाण्ड, अन्धविश्वास और बर्हिपूजा को छोड़कर महिलायें आन्तरिक साधना में लग सकी।

जो राजपरिवार की महिलाएं थीं उन्हें भी इस मार्ग पर चलने के क्रम में कष्ट उठाना पड़ा, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग की महिलाओं ने कैसे इन कुरीतियों का विरोध किया यह भी एक आश्चर्यजनक परिदृश्य लगता है, किन्तु यह सत्य है कि कुछ महिलायें कांटों के रास्ते पर चली तथा समाज के रूढ़िगत परिवेश से विद्रोह किया, उन्हें सफलता शायद इसलिए मिली कि उन्हें अपने ध्येय के प्रति अटूट विश्वास था और प्रभु में उनकी आस्था अविचल थी। ऐसा लगता है कि उनके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को ईश्वर ने ही दूर कर दिया था और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया था।

सन्तों ने भक्ति की सरल और शीतल धारा समाज में प्रवाहित की जिससे जनजीवन परिष्कृत हुआ। अनके ऐसी रूढ़ियों का अन्त हुआ, जिनसे महिलाओं का जीवन निराश और पीड़ित हो चुका था। यह श्रेय भक्त कवियों को जाता है कि उन्होंने सर्वसाधारण वर्ग की महिलाओं को भक्ति की ओर आकर्षित किया और उनके लिए आत्मिक शान्ति के द्वार खोल दिये।

इसलिए जितना भी प्रभाव उस समय नारी समाज पर पड़ा वह प्रशंसनीय मानना होगा। भक्तों में सामान्य महिला समाज को सार्थक दशा की ओर प्रेरित किया, नारी समाज के प्रति उनका योगदान इसलिए भी सराहनीय माना जायेगा, कि उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में सार्थक प्रयास किया। सन्तों की नैतिक भावना से नारी समाज ने मानसिक परिष्कार की शिक्षा दी। उनकी नैतिक भावना कोई बालाचार या ऊपर से थोपी गयी आचार संहिता नहीं थी। महान अथवा श्रेष्ठ बनने के लिए वह ह्रदय एवं मस्तिष्क के सामंजस्य से उपजी चैतन्यता थी, उनकी नैतिक चेतना ने समाज के लोगों के अन्तर्मन को प्रकाशवान किया। मानवता और बन्धुत्व का सन्देश देने के कारण भी भक्त कवियों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी मुधर वचन वाणी, युगयुगीन और शाश्वत बन गयी।

मध्ययुग के ऐसे प्रश्न जो समाज में अनुत्तरित थे, उन सब का समाधान प्रेमाभक्ती के मार्ग द्वारा सन्त भक्तों ने तत्काल प्रस्तुत दिखाया था। राजनैतिक एवं सामाजिक वर्जनाओं द्वारा थोपी गयी बनावटी जीवन–शैली को व्यर्थ बताकर, उन्होंने पीड़ित एवं त्रस्त जनता को नव–चेतना का पाठ पढ़ाया तथा आचार–विचार की श्रेष्ठता का शंखनाद किया।

मध्ययुग के समाज में यह स्पष्ट हो गया कि धर्म वह है, जो मनुष्य को मनुष्यता सिखाये यदि कट्टरता और कर्मकाण्ड तो वह धर्म नहीं हो सकता। धर्म वह है, जो धारण करने योग्य है, अर्थात दया, क्षमा, प्रेम, करूणा, वात्सल्य और मानवता। जिस तरह पुष्प से स्वतः निःसृत होती रहती है सुगन्ध, तभी वह फूल है, इसी तरह मनुष्य यदि संकीर्ण है, हिंसक है और अनैतिक तो वह मनुष्य नहीं है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

मनुष्य से स्वतः निःसृत होनी चाहिए। मनुष्यता जो उदारता समन्वय और सामंजस्य में प्रकट होती है। मध्ययुग के समाज में ऐसे महान सन्देश बोलचाल की भाषा में पूरे भारत में स्वतः प्रसारित होते रहे और एक हलचल युक्त समाज में शान्ति और सहअस्तित्व स्थापित हो सकी। हिंसा भर्त्सना सभी धर्मों में की गयी, किन्तु इतने प्रभावी ढगं से इसे मध्ययुग में ही कहा गया।

निश्चय ही नैतिकता एवं सदाचार से परिपूर्ण व्यक्ति ही श्रेष्ठ मनुष्य बनता है। मनुष्य से नर और नर से हंस बनकर वह देवत्व की ओर पुन्य पथ पर बढ़ता चला जाता है, वह नर हो या नारी, श्रेष्ठता की ओर बढ़ने का समाज में यही क्रम है, क्योंकि यही गन्तव्य है। विशिष्ट उपदेश को महिला सन्तों और भक्तों ने भी मुखरित किया था। उनकी शिक्षा युगयुगीन रहेगी।

सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 ओम प्रकाश शर्मा, सन्त स ाहित्य की लौकिक पृष्ठभूमि, पृ. 188.
2. डॉ० रेखा मिश्रा, बुमैन इन मुगल इण्डिया, दिल्ली 1967, पृ. 138.
3. दास पुरी चोपड़ा भारत का सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास भाग–2 दिल्ली।
4. डॉ0 कन्हैया लाल, डॉ० झारखण्ड चौबे, मध्ययुगीन समाज और संस्कृति हिन्दी संस्थान लखनऊ 1979 पृ. 352
5. डॉ0 रेखा मिश्रा, बुमैन इन मुगल इण्डिया, दिल्ली 1967, पृ. 138.
6. वही पृ0 139.
7. जदुनाथ सरकार, स्टडीज इन मुगल इण्डिया, कलकत्ता, 1919, पृ. 301.
8. डॉ0 सावित्री सिन्हा, मध्यकालीन हिन्दू कवयित्रि दिल्ली, 1953 पृ. 106–107.
9. डॉ0 नागेश सुन्दरम मीरा और आण्डाल का तुलनात्मक अध्ययन प्रयाग।

*****